

Training on concept of Soil Moisture Conservation and its Importance in Forestry

मृदा नमी संरक्षण की अवधारणा एवं वानिकी में इसका महत्व

दिनांक 08/09/2026 से 10/09/2026

तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में दिनांक 08/09/2026 से दिनांक 10/09/2026 तक राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर की वन प्रबंधन प्रभाग द्वारा श्री प्रदीप वासुदेवा^{भा.व.से.} संचालक रा.व.अ.सं. जबलपुर एवं श्री संदीप फैलोअर उपसंचालक के मार्गदर्शन में आयोजित किये गये हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम में दक्षिण बैतूल, नीमच, बड़वानी, सीहोर, होशंगाबाद, झाबुआ, अनूपपुर, भिण्ड एवं राजगढ़ वनमंडलों से कुल 46 प्रशिक्षणार्थियों, जिनमें वन परिक्षेत्र अधिकारी, वनपाल एवं वनरक्षक ने सक्रिय सहभागिता की।

अपने उद्घाटन उद्बोधन में अधिकारियों ने वर्तमान समय में गिरते भू-जल स्तर, जलवायु परिवर्तन तथा प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ते दबाव के परिप्रेक्ष्य में मृदा एवं जल संरक्षण की आवश्यकता पर विशेष बल दिया। उन्होंने कहा कि वानिकी परियोजनाओं की सफलता काफी हद तक मृदा में नमी के संरक्षण एवं वर्षा जल के प्रभावी प्रबंधन पर निर्भर करती है। मृदा नमी संरक्षण न केवल पौधों की वृद्धि एवं वनों के पुनर्जीवन में सहायक है, बल्कि जल संरक्षण, जैव विविधता संवर्धन तथा सतत वन प्रबंधन का भी महत्वपूर्ण आधार है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में विभिन्न विषय विशेषज्ञों द्वारा प्रतिभागियों को मृदा एवं जल संरक्षण के विविध आयामों पर तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया गया। इस अवसर पर श्री के. एल. कावरे (सेवानिवृत्त ए.सी.एफ.), श्री राघवेन्द्र बिसेन (सेवानिवृत्त ए.सी.एफ.), श्री एस. के. जैन (सेवानिवृत्त ए.सी.एफ.), डॉ. यशपाल सिंह (सहायक प्राध्यापक, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर), डॉ. रोहित पाण्डेय (सहायक प्राध्यापक, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर) तथा डॉ. विजय बघारे (विभागाध्यक्ष, वानिकी विभाग, मंगलायतन विश्वविद्यालय, जबलपुर) ने पावर पॉइंट प्रस्तुतियों (PPT) के माध्यम से अपने व्याख्यान प्रस्तुत किए। विशेषज्ञों ने मृदा स्वास्थ्य संरक्षण, जल संवर्धन की वैज्ञानिक तकनीकों, वर्षा जल संचयन, भू-जल पुनर्भरण तथा वानिकी क्षेत्रों में वर्षा जल के प्रभावी प्रबंधन एवं संरक्षण के उपायों पर विस्तृत तकनीकी जानकारी साझा की। साथ ही, उन्होंने सतत वन प्रबंधन में मृदा एवं जल संरक्षण संरचनाओं की उपयोगिता तथा उनके प्रभावी क्रियान्वयन से संबंधित व्यावहारिक पहलुओं पर भी प्रकाश डाला।

प्रशिक्षण के अंतर्गत वन परिक्षेत्र कुण्डम के क्षेत्र भ्रमण के दौरान गेबियन स्ट्रक्चर, परकोलेशन टैंक एवं बोल्डर चेक डैम जैसी मृदा एवं नमी संरक्षण संरचनाओं का प्रत्यक्ष अवलोकन कराया गया। इस क्षेत्र भ्रमण से प्रतिभागियों को इन संरचनाओं के निर्माण, उपयोगिता एवं वन क्षेत्रों में वर्षाजल संरक्षण के व्यावहारिक पहलुओं की जानकारी प्राप्त हुई।



